खुतबा दिया अपने अंत से तीन माह पहले और बहुत बड़ी भीड़ के सामने हज़रत अली (अ.स.) को अपने हाथों पर उठा कर भीड़ से पूछा कि क्या वह सब लोगों से इखतियार ( ) में बड़े है या नहीं। तो सब लोगों ने कहा ''ऐसा ही है ऐ अल्लाह के रसूल''। फिर रसूल ने कहा'' जिसका मैं मौला (मालिक) उसका अली मौला और जो अली का दुश्मन वा मेरा दुश्मन।'' जैसे ही रसूल ने यह बात पूरी करी वैसे ही कुरान की यह आयत आई'' आज हमने तुम्हारा मज़हब (दीन) पूरा कर दिया और मेरे नज़दीक़ (पास) तुम्हारा दी इस्लाम है।''

फिर रसूल ने सबसे कहा कि क़सम खाओ कि तुम अली के साथ हो और अली को मुबारक बाद दो। और उमर इब्ने अल खत्ताब ने भी अली को मुबारक बाद दी और कहा ''बहुत अच्छा अली। आज से तुम ईमान वाले लोगों के मालिक हो गये हो।

एक अरब का रहने वाला आया और रसूल ने कहने लगा कि ''आपने कहा कि खुदा एक है और आप उसके रसूल, यह हमने माना। आपने कहा कि दिन में पाँच बार नमाज़ पड़ो हमने माना। आपने कहा रोज़े रखो हमने माना, फिर आपने हज करने को कहा हमने माना। मगर अब आपने अपने भाई को मौला मानने को हा तो यह आप की मरज़ी थी या आपके खुदा की।''

क्या रसूल ने किसी को वारिस बनाया

क्या मौला का मतलब दोस्त नहीं

हांलाकि बहुत से सुन्नी शिक्षाविद् अलग अलग उम्र के और अलग अलग नज़रियों वाले इस बात का पूर्णता मानना बहुत मुश्किल समझते हैं कि रसूल ने किसी का वारिस बनाया था जिसको वास्तव में नहीं माना गया। उस समय में घटी घटनाँए विस्तार के साथ प्रस्तुत करना याहँ पर मुश्किल है। मगर ज़रूरी बात ह है कि बहुत से सुन्नी शिक्षाविद् यह कहते हैं कि पैगम्बर साहब ने अली को लोगों का दोस्त और सहायक (मदद करने वाला) बनाया था।

इस घटना के कई पहलुओं से साबित होता है कि आयतें रसूल की ज़िंदगी में आखिरी समय लोगों की भीड़ और उनका यह मानना कि रसूल सबसे उत्तम, महान और चरित्रवान है, उमर का बधाई देना और बहुत से अन्य तथ्य जिनको यहाँ पर बताना मुश्किल (कठिन) है। यह सब साबित कर देंगे कि रसूल ने किसी को वारिस बनाया था। एक सबूत यह भी है कि 'मौला' शब्द का मतलब है रसूल के बाद सबसे ज़्यादा अधिकार रखने वाला व्यक्ति।

आखिरी शब्द - अगर अभी - भी कोई शक हो कि रसूल ने किसे वारिस बनाया था तो अब एक आखिरी दलील यह है कि : 'जब हज़रत अली (अ.स.) को खलीफा बनाया गया तो उनके राज्य में एक दिन इमाम अली ने अनस बिन मालिक जो रसूल के दोस्त थे उनसे कहा कि ''तुम ने खड़े होकर, रसूल की बात जो तुमने ग़दीर में सुनी थी। उसे लोगों को सामने स्पष्ट क्यों नहीं किया?'' इस पर उसने कहा ''**ऐ अमीरुल मोमेनीन मैं बूढ़ा हो चला हूँ और अब मुझे कुछ याद नहीं रहता।**'' तब हज़रत अली ने कहा ''**अल्लाह करे कि तुम पर कोड़ का एक सफेद धब्बा आ जाए जिस तुम पगड़ी से छुपा ना सको अगर तुम जान - बूझ कर झूठ बोल रहे हो।**'' तब अनस के उठने से पहले उसके चेहरे पर एक बड़ा और सफेद धब्बा आ गया।

''ग़दीरे खुम वाले दिन क्या हुआ था?''

ग़दीर का मैदान मक्के से कुछ मीलों की दूरी पर है मदीने को जाने की सड़क पर। १८ ज़िलहज (१० मार्च ६३२) को रसूल हज करके वापस आ रहे थे तब एक आयत ''ऐ रसूल ऐलान कर दो जा हमनेकहा है'' खुदा की तरफ से आई। तब रसुल रूके एक ऐलान करने के लिए और अब लोगों को जो वहाँ से अपने अपने घरों को चले गए जाते बुलाया और हुक्म दिया की एक पेड़ों की लकड़ियों का मिम्बर (ऊचा स्थान जहाँ से भीड़ को सम्बोधित किया जाए) बनाया जाए। फिर ज़ोहर की नमाज़ के बाद रसूल ने